9 निर्भय बनो



फणीश्वरनाथ रेणु
(जन्म : सन् 1921 ई. : निधन : सन् 1977 ई.)

प्रसिद्ध आंचलिक कथाकार 'रेणु' का जन्म बिहार में वर्तमान बिहार के पूर्णिया जिले के औराही-हिंगना गाँव में हुआ था। उनकी शिक्षा-दीक्षा उनके गाँव, विराटनगर (नेपाल) तथा वाराणसी में हुई। उन्होंने भारत तथा नेपाल के स्वाधीनता आंदोलनों में सक्रिय भाग लिया तथा कारावास भोगा। कुछ समय तक उन्होंने आकाशवाणी पटना में कार्य किया। अपने पहले उपन्यास ''मैला आँचल'' के प्रकाशन के साथ ही वे विख्यात हो गए। उसके पहले वे एक कहानीकार तथा रिपोर्ताज लेखक के रूप में साहित्य-जगत में सुपरिचित हो चुके थे।

'रेणु'जी की रचनाओं में उनका जीवन अनुभव मुखरता है। जीवन की सुरुपता-कुरुपता को मानवीय सहृदयता तथा पूर्ण तटस्थता के साथ उन्होंने अपनी रचनाओं में व्यक्त किया है। उनकी भाषा में लोक बोलियों के शब्दों का प्रयोग ध्यानाकर्षक है। भाषा में ताजगी और नयापन है। मैला आँचल, परती परिकथा, जुलूस, पल्टू बाबू रोड, कितने चौराहे आदि उनके प्रमुख उपन्यास तथा ठुमरी, अग्निखोर, एक आदिमरात्रि की महक आदि उनके प्रमुख कहानीसंग्रह हैं। भारत सरकार ने उन्हें 'पद्मश्री' की उपाधि से सम्मानित किया था।

यह अंश उनके उपन्यास 'कितने चौराहे' के सातवाँ प्रकरण से लिया गया है। विद्यार्थी जीवन में ही मानवीय-सामाजिक मूल्यों के प्रति कथानायक मनमोहन का कैसे झुकाव होता है, इस अंश में उसका चित्रण है। शिक्षक इस पाठ से निर्भयता के गुण का विकास करने का प्रयास करेगा।

प्रियोदा !

प्रियव्रत राय मैट्रिक में पढ़ता है। स्कूल के सभी लड़के और मास्टर उसको प्यार करते हैं। स्कूल ही नहीं, उस छोटे-से कस्बे में उसको प्रायः सभी जानते हैं। हर रविवार की सुबह बगल में झोली लटकाकर 'संन्यासी-आश्रम' के लिए मुठिया वसूलने निकलता है- कभी अकेला, कभी साथियों के साथ। स्कूल का कोई छात्र या शिक्षक बीमार पड़ा कि प्रियोदा अपनी टोली के साथ उसके घर पर हाजिर। जब तक रोगी भला-चंगा न हो जाए, उसका दल सेवा में जुटा रहता है।

रोबी और कालू प्रियोदा के दल में हैं। उन लोगों ने मनमोहन को भी अपने साथ प्रियोदा के दल में शामिल कर लिया।

हर शनिवार को परमान के उस पार 'बालूचर' पर प्रियोदा के दल के सदस्य, स्कूल की छुट्टी के बाद जमा होते हैं। खेल-कूद, गाने-बजाने के अलावा प्रियोदा दुनिया-भर की खबर सुनाते हैं। रविवार का प्रोग्राम तय करते हैं, किस मुहल्ले में कौन जाएगा मुठिया वसूलने। किस बीमार की सेवा करने कौन-कौन जाएँगे।

उस दिन मनमोहन का परिचय देते हुए कालू ने कहा था, ''प्रियोदा! यह मोना-मनमोहन। खूब तेज लड़का है। 'क्लब' का सदस्य होना चाहता है।''

प्रियोदा ने मनमोहन को सिर से पैर तक देखकर पूछा था, ''भारतवर्ष के एक ऐसे आदमी का नाम लो, जिसे लोग भगवान का अवतार समझते हैं।''

''महात्मा गांधी।''

''ठीक है। तुम पढ़-लिखकर क्या बनना चाहते हो?'' प्रियोदा का दूसरा सवाल।

मनमोहन चुप रहा। फिर बोला, ''वकील।''

सभी ठठाकर हँसे । लेकिन प्रियोदा गम्भीर ही रहे। बोले, ''ठीक है। बीमार लोगों की सेवा करना जानते हो?''

''सीख लेंगे।''

''शाबाश! यदि रोगी हैजा से पीड़ित हो?''

मनमोहन चुप रहा, क्योंकि हैजा के नाम से ही उसे डर लगने लगता है।

''गाना जानते हो?''

''जी।''

''तैरना?''

''जी नहीं।''

प्रियोदा ने सूर्यनारायण नामक सदस्य से कहा, ''सूरज! मोना तैरना नहीं जानता।''

''सीख जाएगा। एक दिन उठाकर पानी में फेंक दूँगा, खुद तैरने लगेगा।''

सभी हँसे। सूर्यनारायण पढ़ने में कमज़ोर हैं, लेकिन शरीर उसका मजबूत है। रोज एक सौ 'डंड-बैठक' करता है। उसके साथी 'सूरज पहलवान' कहते हैं, उसको। दल के सदस्यों को तैरना सिखलाना उसी का काम है।

उस दिन सभी ने नए सदस्य मोना, यानी मनमोहन से गीत सुनने की इच्छा प्रकट की। मनमोहन पहले लजाया, किन्तु जब प्रियोदा ने आग्रह किया तो उसने खखारकर गला साफ किया। कौन गीत गाये वह? उसने शुरू किया।

''राम रहीम न जुदा करो भाई
दिल को सच्चा रखना जी...।''

गीत समाप्त होने के बाद प्रियोदा बोले, ''वाह! बहुत मीठा गला है तुम्हारा! कालू, तुम 'प्रभातफेरी' वाले दोनों गीत मोना को सिखा देना।''

सूरज पच्छिम की ओर झुक गया। बालूचर पर लाली उतर आई। परमान की धारा पर डूबते हुए सूरज की अंतिम किरण झिलमिलाई। पखेरू दल बाँधकर बाँस-वन की ओर लौटने लगे। प्रियोदा के दल के सभी सदस्य पंक्ति बाँधकर लौटे। पुल के पास एक गाड़ीवान तन्मय होकर गीत गा रहा था- ''भोला गरीबक दीन-पहिया हरब भोला गरीब'क दीन।''

सूरज ने भी उसी सुर में सुर मिलाकर गाना शुरू किया- ''एक टा जे लोटा छल, बेटा छल तीन-पनियाँ पीबैत काल लोटा लेलक छीन...''

कृत्यानन्द झा ने कहा, ''विद्यापति की 'लाचारी' है।''

''लाचारी?''

''लाचारी।''

-ट्रट्ठाँय!...

बालूचर के उस पार से किसी ने फायर किया। एक पखेरू बालू पर गिरकर छटपटाने लगा। उसका जोड़ा विकल होकर बहुत देर तक रोता रहा। मटमैले अन्धकार में एक अर्दलीनुमी आदमी दौड़ा हुआ आया और मरी हुई चिड़िया के डैने को पकड़कर चिल्लाया, ''मिल गया हुजूर!''

इब्राहीम बोला, ''सब-डिप्टी साहब का अर्दली है। साला, भारी खचड़ा है।''

प्रियोदा के मुँह से अचानक निकला, ''हॉल्ट!''

तब इब्राहीम को अपनी गलती का एहसास हुआ। दल का नियम है कोई सदस्य किसी किस्म का अपशब्द या गाली मुँह से नहीं निकालेगा। इब्राहीम ने तुरंत सिर झुकाकर दल के नायक प्रियोदा और सदस्यों से माफ़ी माँगी, ''बात यह है कि साले ने...।''

सभी हँसे। प्रियोदा ने गंभीर होकर कहा, ''इब्राहीम, यह तुम्हारी आठवीं गलती है, 'दस' होते ही हम तुम्हारे साथ नहीं रहेंगे।''

इब्राहीम ने पूछा, ''लेकिन सरकारी अफ़सरों को गाली देने में क्या हर्ज है?''

''तुम्हारा मुँह खराब होगा। उनका कुछ भी नहीं बिगड़ेगा।''

''मगर वे जो गाली देते हैं?''

''वे ही क्यों, बहुत लोग गालियाँ बकते हैं।''

''नहीं प्रियोदा, आप इब्राहीम को नहीं समझा सकिएगा। वह महीन बात देरी से बूझता है। मैं समझा देता हूँ। देखो... इब्राहीम! यदि 'क्लब' का मेम्बर रहना है तो इसके 'रूल्स' को मानना होगा। नियम है कि कोई सदस्य आपस में बातचीत के सिलसिले में भी कोई खराब शब्द नहीं बोलेगा। जानते हो न?... बस। बात खत्म।''

'सहुआइन-धर्मशाला' के पास आकर सभी ने एक-दूसरे से विदाई ली। कालू ने कहा, ''मोना, तू रास्ते में डरेगा, मैं जानता हूँ। चल, मैं पहुँचा दूँ।''

प्रियोदा ने कहा, ''मोना डरता है? मैं उसे पहुँचा दूँगा। तू घर जा कालू।''

रास्ते में प्रियोदा चुप रहे। एक सूनी जगह पर आकर रुक गए।... सड़क के दोनों ओर बड़े-बड़े पीपल के पेड़। दोनों ओर बहुत दूर तक खंडहर और मैदान। पास के एक उजड़े हुए मकान की ओर इशारा कर प्रियोदा ने कहा, ''जानते हो, इस घर में कभी मुर्दों की चीर-फाड़ होती थी- पोस्टमार्टम-हाउस था यह। इसीलिए, लोगों को डर है कि आसपास के पेड़ों पर भूत-पिशाच किलकिल करते रहते हैं, मैदान में प्रेतनियाँ नाचती हैं- संतालियों की तरह झुंड बाँधकर।... क्यों, डरने लगा?''

''अकेले यहाँ आ सकते हो?''

''जी नहीं।''

प्रियोदा हँसे। बोले, ''देख मोना, भूत-प्रेत ऐसे आदमी को कभी नहीं तंग करता, जो 'दस' काम करता हो। तुम्हारी उम्र में मैं भी डरता था। मेरे गुरु महाजन ने मुझसे हँसकर कहा कि 'दस' का काम करनेवाला तो खुद 'भूत' होता है- उसको भूत क्या कर सकता है?... चलो, शुरू करो तो वह गाना-राम रहीम ना...''

मनमोहन गाने लगा, ''राम रहीम ना जुदा करो भाई, दिल को सच्चा रखना जी-ई-ई-ई!!''

शब्दार्थ और टिप्पणी

परमान एक नदी का नाम **बालूचर** रेतीला नदी पट **जुदा** अलग **आग्रह** अनुरोध फ़रमाइश, हठ **पखेरू** पंखवाले, पक्षी **दल** झुंड, टीली **पंक्ति** कतार **तन्मय** तल्लीन, समाधिस्थ **नाचारी** एक लोकगीत **विकल** व्याकुल **हॉल्ट** रुको **हर्ज** नुकसान **रुल्स** नियम **अपशब्द** गाली, बुरा शब्द **संताल** एक आदिवासी जाति **खचड़ा** अड़ंगेबाज, मूर्ख

मुहावरे

मुठिया वसूलना किसी नेक काम के लिए मुट्ठीभर अनाज की भीख माँगना **भला चंगा** स्वस्थ **सिर से पैर तक देखना** भली भाँति देखना **महीन बात** सूक्ष्म बात

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(1) प्रियोदा को सभी लोग क्यों प्यार करते है?
(2) प्रियोदा के दल के तीन सदस्यों के नाम बताइए।
(3) प्रियोदा की टोली कौन-कौन से सेवा कार्य करती है?
(4) मनमोहन को तैरना सिखाने की जिम्मेदारी किसे सौंपी गई?
(5) इब्राहीम ने किस बात के लिए माफ़ी माँगी?
(6) अपशब्द न बोलने के बारे में क्लब का क्या नियम था?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) प्रियोदा के दल के सदस्य शनिवार की शाम को कहाँ पर एकत्र होते हैं?
(2) स्कूल की छुट्टी के बाद सभी सदस्य मिलने पर क्या करते हैं?
(3) मनमोहन ने प्रियोदा के पहले प्रश्न के उत्तर में किस भारतीय महापुरुष का नाम लिया?
(4) पक्षी को किसने गोली मारी थी?
(5) प्रियोदा के मुँह से 'हॉल्ट' क्यों निकला?
(6) सड़क के दोनों ओर कौन-से वृक्ष थे?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) कस्बे के अधिकांश लोग प्रियोदा और साथियों को क्यों पहचानते थे?

(2) प्रियोदा की टोली शनिवार को स्कूल से छूटने के बाद क्या करती है?

(3) मनमोहन को तैरता सिखाने के बारे में सूर्यनारायण ने क्या कहा?

(4) पुल के पास गाड़ीवान क्या कर रहा था?

(5) मनमोहन का भय दूर करने के लिए प्रियोदा ने क्या किया?

(6) भूत-प्रेत के बारे में प्रियोदा ने मनमोहन से क्या कहा?

(7) प्रियोदा की टोली का रविवार को क्या कार्यक्रम होता था?

4. सविस्तार समजाइए :

(1) सूरज पश्चिम की ओर झुक गया।

(2) दस और देश का काम करनेवाला तो खुद भूत होता है- उसको भूत क्या कर सकता है?

(3) राम रहीम ना जुदा करो भाई, दिल को सच्चा रखना जी...

(4) भोला गरीबक दीन-पहिया हरब भोला...

5. सही जोड़े मिलाइए :

मनमोहन	पहलवान
प्रियव्रतराय	खचड़ा
सूर्यनारायण	एक नदी
डिप्टी का अर्दली	मैट्रिक का विद्यार्थी
परमान	हैजे से डरनेवाला

6. शब्द समूहो के लिए एक-एक शब्द लिखिए :

(1) दूसरों के किए हुए उपकार को माननेवाला...

(2) दूसरों के किए गए उपकार को न माननेवाला...

(3) मुर्दों के चीर-फाड़ की जगह.....

(4) जहाँ बीमारों को भर्ती करके इलाज होता है...

7. सूचनानुसार उत्तर दीजिए :

(क) विरुद्धार्थी शब्द लिखिए:

गरीब, प्यार, स्वस्थ, गलत, उजड़ा

(ख) दो-दो समानार्थी शब्द लिखिए:

सुबह, शाम, दल, कमज़ोर, मकान

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- यदि उपलब्ध हो सके तो 'कितने चौराहे' उपन्यास पढ़िए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- निर्भयता के गुणवाली कहानियाँ ढूँढ़कर विद्यार्थियों को पढ़कर वर्ग में सुनाइए।

●